



सबसे ज्यादा प्रेम में अंधा कौन?

बेताल-पच्चीसी इक्कीसवीं कहानी

विशाला नाम की नगरी में पदमनाभ नाम का राजा राज करता था। उसी नगर में अर्थदत्त नाम का एक साहूकार रहता था। अर्थदत्त के अनंगमंजरी नाम की एक सुन्दर कन्या थी। उसका विवाह साहूकार ने एक धनी साहूकार के पुत्र मणिवर्मा के साथ कर दिया। मणिवर्मा पत्नी को बहुत चाहता था, पर पत्नी उसे प्यार नहीं करती थी। एक बार मणिवर्मा कहीं गया। पीछे अनंगमंजरी की राजपुरोहित के लड़के कमलाकर पर निगाह पड़ी तो वह उसे चाहने लगी। पुरोहित का लड़का भी लड़की को

चाहने लगा। अनंगमंजरी ने महल के बाग़ में जाकर चंडीदेवी को प्रणाम कर कहा, “यदि मुझे इस जन्म में कमलाकर पति के रूप में न मिले तो अगले जन्म में मिले।”

यह कहकर वह अशोक के पेड़ से दुपट्टे की फाँसी बनाकर मरने को तैयार हो गयी। तभी उसकी सखी आ गयी और उसे यह वचन देकर ले गयी कि कमलाकर से मिला देगी। दासी सबेरे कमलाकर के यहाँ गयी और दोनों के बगीचे में मिलने का प्रबन्ध कर आयी। कमलाकर आया और उसने अनंगमंजरी को देखा। वह बेताब होकर मिलने के लिए दौड़ा। मारे खुशी के अनंगमंजरी के हृदय की गति रुक गयी और वह मर गयी। उसे मरा देखकर कमलाकर का भी दिल फट गया और वह भी मर गया। उसी समय मणिवर्मा आ गया और अपनी स्त्री को पराये आदमी के साथ मरा देखकर बड़ा दुःखी हुआ। वह स्त्री को इतना चाहता था कि उसका वियोग न सहने से उसके भी प्राण निकल गये। चारों ओर हाहाकार मच गया। चंडीदेवी प्रकट हुई और उसने सबको जीवित कर दिया

इतना कहकर बेताल बोला, “राजन्, यह बताओ कि इन तीनों में सबसे ज्यादा राग में अंधा कौन था?”

राजा ने कहा, “मेरे विचार में मणिवर्मा था, क्योंकि वह अपनी पत्नी को पराये आदमी को प्यार करते देखकर भी शोक से मर गया। अनंगमंजरी और कमलाकर तो अचानक मिलने की खुशी से मरे। उसमें अचरज की कोई बात नहीं थी।”

राजा का यह जवाब सुनकरव बेताल फिर पेड़ पर जा लटका और राजा को वापस जाकर उसे लाना पड़ा। रास्ते में बेताल ने फिर एक कहानी कही।

बेताल पच्चीसी - **Betal Pachchisi**

बेताल पच्चीसी पच्चीस कथाओं से युक्त एक ग्रन्थ है। इसके रचयिता बेतालभट्ट बताये जाते हैं जो न्याय के लिये प्रसिद्ध राजा विक्रम के नौ रत्नों में से एक थे। ये कथायें राजा विक्रम की न्याय-शक्ति का बोध कराती हैं। बेताल प्रतिदिन एक कहानी सुनाता है और अन्त में राजा से ऐसा प्रश्न कर देता है कि राजा को

उसका उत्तर देना ही पड़ता है। उसने शर्त लगा रखी है कि अगर राजा बोलेगा तो वह उससे रूठकर फिर से पेड़ पर जा लटकेगा। लेकिन यह जानते हुए भी सवाल सामने आने पर राजा से चुप नहीं रहा जाता।

बैताल पचीसी की कहानियाँ भारत की सबसे लोकप्रिय कथाओं में से हैं। इनका स्रोत राजा सातवाहन के मन्त्री “गुणाढ्य” द्वारा रचित “बड कहा” (संस्कृत : बृहत्कथा) नामक ग्रन्थ को दिया जाता है जिसकी रचना ई. पूर्व ४९५ में हुई थी। कहा जाता है कि यह किसी पुरानी प्राकृत में लिखा गया था और इसमें ७ लाख छन्द थे। आज इसका कोई भी अंश कहीं भी प्राप्त नहीं है। कश्मीर के महाकवि सोमदेव भट्टराव ने इसको फिर से संस्कृत में लिखा और कथासरित्सागर नाम दिया। बड़कहा की अधिकतम कहानियों को कथा सरित्सागर में संकलित कर दिए जाने के कारण ये आज भी हमारे पास हैं। “बैताल पञ्चविंशति” यानी बैताल पचीसी “कथासरित्सागर” का ही भाग है। समय के साथ इन कथाओं की प्रसिद्धि अनेक देशों में पहुँची और इन कथाओं का बहुत सी भाषाओं में अनुवाद हुआ। बैताल के द्वारा सुनाई गई यो रोचक कहानियाँ केवल दिल बहलाने के लिये नहीं हैं, इनमें अनेक गूढ अर्थ छिपे हैं। क्या सही है और क्या गलत, इसको यदि हम ठीक से समझ लें तो सभी प्रशासक राजा विक्रम कि तरह न्यायप्रिय बन सकेंगे और छल व द्वेष छोड़कर, कर्म और धर्म की राह पर चल सकेंगे। इस प्रकार ये कहानियाँ न्याय, राजनीति और विषण परिस्थितियों में सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास करती हैं।

1. बेताल-पच्चीसी पहली कहानी
2. बेताल-पच्चीसी दूसरी कहानी
3. बेताल-पच्चीसी तीसरी कहानी
4. बेताल-पच्चीसी चौथी कहानी
5. बेताल-पच्चीसी पाँचवीं कहानी
6. बेताल-पच्चीसी छठी कहानी
7. बेताल-पच्चीसी सातवीं कहानी
8. बेताल-पच्चीसी आठवीं कहानी
9. बेताल-पच्चीसी नवीं कहानी
10. बेताल-पच्चीसी दसवीं कहानी
11. बेताल-पच्चीसी ग्यारहवीं कहानी
12. बेताल-पच्चीसी बारहवीं कहानी
13. बेताल-पच्चीसी तेरहवीं कहानी
14. बेताल-पच्चीसी चौदहवीं कहानी
15. बेताल-पच्चीसी पन्द्रहवीं कहानी
16. बेताल-पच्चीसी सोलहवीं कहानी
17. बेताल-पच्चीसी सत्रहवीं कहानी
18. बेताल-पच्चीसी अठारहवीं
19. बेताल-पच्चीसी उन्नीसवीं कहानी
20. बेताल-पच्चीसी बीसवीं कहानी
21. बेताल-पच्चीसी इक्कीसवीं कहानी
22. बेताल-पच्चीसी बाईसवीं कहानी
23. बेताल-पच्चीसी तेईसवीं कहानी
24. बेताल-पच्चीसी चौबीसवीं कहानी
25. बेताल-पच्चीसी पच्चीसवीं कहानी

